Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 GISRRJ | Volume 3 | Issue 4 | ISSN : 2582-0095

प्राचीन भारतीय साहित्य में वर्णित मानवीय मूल्यों का समाजिक संदर्भ

ओम प्रकाश सिंह यादव
स्थायी पता ग्राम टोड़रपुर,
पो0–मनियां–मिर्जाबाद, गाजीपुर,
उत्तर प्रदेश,भारत

शोध आलेख सार– भारत का प्राचीन साहित्य पूरी तरह से समाज केन्द्रित है । हमे आवश्यकता इस बात की है कि आधुनिकीकरण के नाम पर पाश्चात्य जीवन शैली व जीवन मूल्यों को अपनाना छोड़ दे । मानव का स्वभाव है कि उसे दूसरे की बुरी आदते जल्दी याद आती है अपनी अच्छी चीजें नहीं । अगर भारत को परम्वैभव के पद पर पहुंचाना है तो प्राचीन संस्कृति व समाज के अनुरुप आचरण करना होगा तभी हम सभ्य समाज की श्रेणी में आयेगें । हमें अपनी मानवीय मूल्यों को अपनाना होगा । अपने मानवधिकारों को लागू करना होगा पाश्चातय के मानव अधिकार सिर्फ कोरी कल्पना है हम देखते है कि वे अपने यहां कैसे रेड इण्डियनों, माओ माओरी, जन जातियों को अपनी भूमि से बेदखल करते है और हमें मानव अधिकार का पाठ पढ़ाते है । उनको हमारे मानव अधिकारों को मानवीय मूल्यों को अपने आचरण में लाना होगा हमें भी अगर देश और समाज को विश्व गुरु के पद पर प्रतिष्ठित करना है तो अपने मानव मूल्यों को अपनाना होगा । बिना मानवीय मूल्य के समाज में आतंकवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद, सम्पदायवाद, उग्रवाद, नक्शलवाद जैसी विचार दारायें पनपती रहेगी । मानव सिर्फ हाड़–मांस को पुतला रहेगा वह रिबोट् की तरह से जिस बटन को दबाओं वह वैसा व्यवहार करता रहेगा । भारत अपने उच्च श्रेष्ठता को प्राप्त करेगा और विश्व गुरु के पद को सुशोभित करेगा ।

मुख्य शब्द– प्राचीन भारतीय, साहित्य, मानवीय, मूल्य, समाजिक।

भारतीय साहित्य की रचना भारत के मनीषियों ने बड़े ही चिंतन के द्वारा की है । हमें पता है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है । पूरा साहित्य ही समाज को केन्द्रित करके लिखा जाता है तथा समाजिक जीवन को प्रेरित करने के लिए रचना की जाती है । किस प्रकार मानव को सभ्य बनाया जाये, पारिवारिक जीवन को सफल बनाने के लिए किन – किन तथ्यों को ध्यान देना आवश्यक है । इसी पर पुरा साहित्य टिका हुआ है । भारतीय साहित्य में जीवन उपयोगी मूल्यों की एक अनवरत श्रृंखला है । हमें पता है कि मूल्य वे मापदण्ड है जो सम्पूर्ण संस्कृति और समाज

को जीवन की सार्थकता प्रदान करते है जिन स्तम्भों पर मानव ने बर्बर अवस्था से सभ्य अवस्था का प्रासाद खड़ा किया है उन्हें ही समाजिक मूल्य की संज्ञा दी गई है । इन मूल्यों के बिना मानव की कल्पना बेकार है मानवीय मूल्य को इस प्रकार परिभाषित कर सकते है कि जो समाज को संगठित और अनुशासित कर समाज कल्याण और व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में सहायक होते है ।

मानवीय मूल्यों को दो भागों में बांटा जा सकता है एक आन्तरिक शुद्धि से दुसरा वाह् शुद्धि से है । आन्तरिक में हम मन, वचन, कर्म, विवेक, ज्ञान, सत्य आचरण आदि को रख सकते है । दुसरे में सत्य, संगत, दान, धर्म, परोपकार, मैत्री, अतिथि सत्कार आदि । समाज परक मूल्यों में इसके अतिरिक्त विश्व बंधुत्व की भावना, शान्ति, प्रेम, अहिंसा, सर्वकल्याण की कामना आदि को भी रख सकते है जो मनुष्य को अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ बनाते है ।

संस्कृत में कहा गया है कि '' येषां न विद्या तपो न दानम्, ज्ञानं न शीलं गुणों न धर्मः ते मृत्युलोके भूवि भार भुता मनुष्यरुपेण मृगाश्चरन्ति'' इसमें तप, तपस्या, दान, ज्ञान, शील और धर्म जैसे गुण ही मानव को अन्य प्राणियों से अलग करते है । इन्हीं गुणों के कारण वह समाज में अपना स्थान अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ बनाता है ।

भारतीय साहित्य में कहा गया है कि –

अभिवादन शीलस्यः नित्यं वृद्धोपसेविनः, चत्वारि तस्यः वर्धनते, आयुर्विद्या यशोबलम्!!1इसमें समाजिक मूल्य प्रणाम करना, समाज के बुजुर्गों की सेवा करने से व्यक्ति की आयु, विद्या, यश और बल में वृद्धि होती है । यह मूल्य बहुत ही बड़ा मूल्य है आज हम देखते है कि घर में बुजुगों की बहुत ही बुरी स्थिति हो गई है तथाकथित पढ़े लिखे लोग मां – बाप को वृद्धा आश्रम में छोड़ आते है वृद्धा आश्रम समाज और सरकार दोनों को ही व्यथित करने के साथ – साथ प्रशासनिक समस्या उत्पन्न करता है । वैदिक संहिताओं में जहां एक ओर मानवीय मूल्य सब जगह प्राप्त होते है । वे किसी देश काल परिस्थिति के अनुरुप न होकर सर्व समाज के लिए अनुकूल होते है ये नियम शास्वत, सार्वभौमिक और सर्वकालीक है । वैदिक सांहिताओं में व भारतीय प्राचीन साहित्यों में सत्यवादिता, गुरुजनों के प्रति सम्मान, त्याग, सदाचार, सत्संगति, अतिथि सत्कार जैसे समाजिक मूल्य दृष्टिगोचर होते है । वही दूसरी ओर पारिवारिक मूल्य जैसे विश्व बंधुत्व की भावना की अभिवृत्ति होती है ।

जैन दर्शन में वर्णित स्यादवाद आज की सबसे बड़ी समस्या ''यह ही सत्य है'' का निराकरण करती है और कहती है ''स्याद्अस्ति, स्याद्नास्ति'' आप भी सही हो और मैं भी सही हूँ । देश काल परिस्थितियों के अनुसार दोनों लोग सही है अतः हमें किसी भी प्रकार का विवाद नहीं करना चाहिए विवाद से समस्या उत्पन्न होती है ।

बौद्ध दर्शन में वर्णित सिद्धांत अविद्या के नाश के द्वारा अपने ज्ञान की पूर्णता को प्राप्त करना समाज को किसी प्रकार के द्वन्द्व के सामाधान के लिए उसके कारण को नष्ट करना है । अगर मुख्य कारण नष्ट हो जाये तो सारी प्रकार की समाजिक समस्यायें अपने आप ही नष्ट हो जायेगी । यजुर्वेद व अर्थवेद में कहा गया है कि –

''संगच्छत्वं संवद्ध्वं सं नो मनांसि जानताम् ।

हम सब साथ – साथ समाज में रहे किसी प्रकार का द्वन्द्व न हो इसी को कहा गया है कि ''माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः ।।

सम्पूर्ण पृथ्वी को माता मानकर सम्पूर्ण प्राणियों को परस्पर एक दूसरें को एकता के सुत्र में बांधने का कार्य करती है । समाज को परस्पर पारिवारिक बनाती है जिससे सब प्राणी एक दूसरें की चिन्ता कर सके । इसी को दूसरे रुप में कहे तो यजुर्वेद का यह मंत्र विश्व शान्ति के संदेश को प्रसारित कर रहा है ।

" ऊँ द्यौः शान्तिरन्तारिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिः ब्रह्म शान्तिः । सर्वं शान्तिः शान्तिरेव
शान्तिः । सा मा शान्तिरेधि ।

अर्थात– पृथ्वी शान्तिदायक हो, आन्तरिक्ष शान्तिदायक हो, जल शान्तिदायक हो, औषधियां शान्ति देने वाली हो, वनस्पतियां शान्ति देने वाली हो इत्यादि इसका कहने का आशय यह है कि हमारे चारों तरफ का पर्यावरण किसी भी प्रकार से दुषित न हो हम सभी प्राणी आपस में मिलकर रहे किसी को भी किसी प्रकार का भय न हो । यह सम्पूर्ण विश्व को एकता के सुत्र में बांधने का मनीषि चिंतन हैं ।

भारतीय जीवन पूरी तरह धर्म पर अधारित जीवन है यहां पर सर्वधर्म समभाव धारणा पर चलते हुए सभी धर्मों के अनुयायियों को पूजा पद्धति की स्वतन्त्रता मिली हुई है । यहां पर अपना और पराया का कोई भेद नहीं है धर्म का मूल्य नैतिकता पर अधारित है । धार्मिक अनुयायी से यह अपेक्षा की जाती है कि धर्म के मूल को माने धर्म का मूल निम्न् है ।

"धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचं इन्द्रीय निर्गहः ।
धीर्विद्या सत्यं अक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ।।

धर्म को भी मूल्यों से जोड़ दिया गया है इसमें धैर्य, क्षमा, इन्द्रीयों का दमन, पवित्रता, इन्द्रीयों को वश में करना, विद्या, सत्य, किसी पर भी अकारण क्रोध न करना, अपने से अधिक धन का संचय न करना इत्यादि लक्षणों को धर्म में समाहित किया गया है । यही जीवन मूल्य उसे अन्य समाजों से श्रेष्ठ बनाते है ।

संस्कृत वांगमय में कहा गया है कि यह अपना है और यह पराया है सोचने वाले व्यक्ति तुच्छ बुद्धि वाले होते है । उदार चरित वाले पूरी पृथ्वी को कुटुम्ब मानते है इसे निम्न् श्लोक में व्यक्त किया गया है –

अयं निजः परो वेति गणना लद्युचेतसाम ।
उदार चरिता नाम तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।

हमारी संस्कृत में अतिथि देवों भव कहा गया है । अतिथि सत्कार मानव जीवन का कर्त्तव्य होता है इसी को अभिज्ञान शाकुन्तलम् में कहा गया है कि आये हुए अतिथि की सेवा न करने पर उसे किस प्रकार कोप का भांजन बनना पड़ता है –

विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम् ।
स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन् कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव ।।[2]

रामायण और रामचरित मानस दोनों में कहा गया कि राजा का क्या कर्त्तव्य होना चाहिए और किस प्रकार अपने भाई, अपने पिता, अपनी माता, तथा पत्नी के साथ कैसा व्यवहार होना चाहिए इसे राम चरित मानस में कहा गया है कि –

''मातु–पिता और गुरु की बानी विनही विचार करुहु शुभ जानी ।'' मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम जी का चरित्र विश्व के लिए अनुकरणीय है इसी लिए कहा गया है कि – ''राम राज बैठे त्रैलोका हर्षित भय गये सब शोका.....'' अर्थात – उनके सिंहासन पर बैठते ही पूरे ब्रम्हाण्ड में खुशी का माहौल छा गया । तथा समाज के चारो वर्णो में प्रेम सम्बन्ध स्थापित हो गया तथा सभी लोग आपस में मिल बैठ कर निर्णय लेने लगे थे ।

अभिज्ञान शाकुन्तलम् में महाकवि कालीदास जी कहते है कि पत्नी का ससुराल में किस प्रकार का व्यवहार होना चाहिए अपने से बड़ों तथा सास–ससुर की सेवा करनी चाहिऐ बिना ऐसा आचरण किये कोई भी स्त्री गृहणी के पद को नहीं प्राप्त कर सकती है । अगर ऐसा करती है तो परिवार संगठित रहता है ।

''सुश्रुषस्व गुरुन कुरु प्रिय सखी वृत्ति..... गृहणी पदं युवतयो वामाः कुलस्या धयः ।[3]

आज हम देखते है कि टीवी सीरीयलो में सास–बहु की लड़ाई दिखायी जाती है ''सास भी कभी बहु थी'' जैसे सीरीयल दिखाये जाते है ''पति पत्नी और वो'' जैसे सीरीयल के सहारे परिवारिक द्वन्द्व का दृष्य दिखाया जा रहा है । इस रुप में हमारा साहित्य बहुत ही उच्च कोटि का था ।

अभिज्ञान शाकुन्तलम् में आधुनिक पर्यावरण संकट निवारण को बहुत ही अच्छे ढ़ंग से व्यक्त किया गया है । कालीदास जी कहते है कि शकुन्तला किस प्रकार पर्यावरण रक्षा का संदेश देती है अपने खाने – पीने से पहले वृक्षों को जल पिला कर ही जल पीती है ।

'पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या नादते प्रिय मण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्..... ।[4]

यह पर्यावरण संरक्षण का संदेश आज के जन मानस के लिए बहुत ही उच्च कोटि का है

अभिज्ञान शाकुन्तलम् में जीवन के सभी क्षेत्रों पर प्रकाश डाला गया है महाकवि कालीदास जी कहते है कि पारिवारिक जीवन में कोई भी निर्णय जल्दीबाजी में नहीं करना चाहिए । आधुनिक युवा पीढ़ी को संदेश देते हुए कहते है कि अपने शील की सुरक्षा का प्रत्यन्त पूर्वक रक्षा करनी चाहिए अज्ञात हृदय के साथ मित्रता, शत्रुता के रुप में बदल जाती है अतः विशेष रुप से परीक्षा करके ही एकांत मैत्री करनी चाहिए । आज कल युवा पीढ़ि फेसबुक और वाट्सप के माध्यम से बिना समझे हुऐ आपस में प्रेम सम्बन्धों की शुरुवात करते है तथा प्रेम – विवाह करके अपने जीवन की शुरुवात करते है । और कुछ दिनों बाद फिर वे तलाक की अर्जी देते है या छले जाते है हमें आये दिन समाचार पत्रों में पढ़ने को मिलता है कि अमुक दुल्हे ने दुल्हन को ठगा तो अमुक दुल्हन ने दुल्हे को ठगकर सम्पत्ति लेकर फरार हो गई या फरार हो गया । कालीदास जी समाजिक कि जीवन प्रति सुक्ष्म दृष्टि थी । उन्होंने काम की अपेक्षा कर्त्तव्य को प्रधानता दी है । वैयक्तिक अनुशासन ही समाजिक मर्यादा का निर्वाहक हो सकता है । इसे निम्न् प्रकार व्यक्त करते है –

अतः परीक्ष्य कर्त्तव्यं विशेषात् संगतं रहः ।

अज्ञात हृदयेस्वेवं वैरी भवति सौहृदम । ।[5]

इस प्रकार अतः परीक्ष्य कर्त्तव्यं लौकिक और समाजिक आचरण की श्रेष्ठता की ओर इंगित करता है ।

इस प्रकार हम निष्कर्षतः हम कह सकते है कि भारत का प्राचीन साहित्य पूरी तरह से समाज केन्द्रित है । हमे आवश्यकता इस बात की है कि आधुनिकीकरण के नाम पर पाश्चात्य जीवन शैली व जीवन मूल्यों को अपनाना छोड़ दे । मानव का स्वभाव है कि उसे दूसरे की बुरी आदते जल्दी याद आती है अपनी अच्छी चीजें

नहीं । अगर भारत को परम्वैभव के पद पर पहुंचाना है तो प्राचीन संस्कृति व समाज के अनुरुप आचरण करना होगा तभी हम सभ्य समाज की श्रेणी में आयेगें । हमें अपनी मानवीय मूल्यों को अपनाना होगा । अपने मानवधिकारों को लागू करना होगा पाश्चातय के मानव अधिकार सिर्फ कोरी कल्पना है हम देखते है कि वे अपने यहां कैसे रेड इण्डियनों, माओ माओरी, जन जातियों को अपनी भूमि से बेदखल करते है और हमें मानव अधिकार का पाठ पढ़ाते है । उनको हमारे मानव अधिकारों को मानवीय मूल्यों को अपने आचरण में लाना होगा हमें भी अगर देश और समाज को विश्व गुरु के पद पर प्रतिष्ठित करना है तो अपने मानव मूल्यों को अपनाना होगा । बिना मानवीय मूल्य के समाज में आतंकवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद, सम्पदायवाद, उग्रवाद, नक्शलवाद जैसी विचार दारायें पनपती रहेगी । मानव सिर्फ हाड़–मांस को पुतला रहेगा वह रिबोट् की तरह से जिस बटन को दबाओं वह वैसा व्यवहार करता रहेगा । भारत अपने उच्च श्रेष्ठता को प्राप्त करेगा और विश्व गुरु के पद को सुशोभित करेगा ।

सन्दर्भ–

1- मनुस्मृति
2- अभिज्ञानशाकुन्तलम् – 4–1
3- अभिज्ञानशाकुन्तलम् – 4–18
4- अभिज्ञानशाकुन्तलम् – 4.6
5- अभिज्ञानशाकुन्तलम्–5.24